1.2 उद्देश्य

आप स्नातक प्रथम वप्र के प्रथम प्रश्न पत्र के खण्ड-1 की इकाई- 1 हिन्दी गद्य का उद्भव व विकास पढ़ने जा रहे हैं। इस इकाई में हिन्दी गद्य के उद्भव व विकास पर प्रकाश डाला गया है। इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आपः

- गद्य एवं पद्य में अन्तर कर सकेंगे।
- हिन्दी गद्य के उद्भव व विकास के विषय में जान सकेंगे।
- ब्रज भाषा तथा खडी़ बोली के गद्य के सम्बन्ध में जानकारियाँ प्राप्त कर सकेंगे।
- अंग्रेजी शासन काल में भाषा सम्बन्धी विभिन्न दृष्टिकोणों को समझ सकेंगे।
- खडी़ बोली की प्रारम्भिक स्थितियों का उल्लेख कर सकेंगे।
- भारतेन्दु तथा द्विवेदी युग के गद्य साहित्य के उद्भव और विकास का उल्लेख कर सकेंगे।
- प्रेमचन्द एवं उनके पश्चात् के गद्य साहित्य के उद्भव व विकास पर संक्षेप में प्रकाश डाल सकेंगे।
- विभिन्न गद्यकारों के योगदान का उल्लेख कर सकेंगे।

1.3 गद्य साहित्य

आपने अब तक अनेक उपन्यास कहानी और निबन्ध पढ़े होंगे, किन्तु क्या कभी आपने विचार किया है कि साहित्य की इन विधाओं का विकास कैसे हुआ? इस इकाई के अन्तर्गत हम इस विषय पर चर्चा करेंगे कि गद्य का उद्भव और विकास कैसे हुआ ? आपने कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास, केशवदास आदि की रचनाएँ पढ़ी होंगी, इससे आपको अनुभव हुआ होगा कि कबीर, तुलसीदास, सूरदास और केशवदास की रचनाएँ उपन्यास और कहानी से भिन्न प्रकार की रचनाएँ हैं। साहित्य की भाषा में कबीर, तुलसीदास, आदि की रचनाओं को छन्दोबद्ध रचना या कविता कहा जाता है, जबकि उपन्यास, कहानी, निबन्ध आदि को गद्य । इस अन्तर को और अधिक स्पष्ट रूप में जानने के लिए आप कबीरदास की इन पंक्तियों को पढिए ।

वकरी पाती खात है, ताकी काढ़ी खाल,
जो बकरी को खात है, तिनको कौन हवाल।।

अब नीचे दी गयी इन पंक्तियों की तुलना कबीरदास की उपरोक्त रचना से कीजिये। निम्नलिखित पंक्तियाँ डॉ0 पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल के निबन्ध कबीर और गाँधी से उद्धृत की गयी है।

Scanned by CamScanner

''यदि कबीर अपनी ही कविता के समान सीधी सादी भाषा में उल्लिखित आदर्श हैं तो गाँधी उसकी और भी सुबोध क्रियात्मक व्याख्या, यदि प्रत्येक व्यक्ति इस विशद व्याख्या की प्रतिलिपि बन सके तो जगत का कल्याण हो जाय।"

उपरोक्त दोनों उदाहरणों की तुलना करने पर आप स्पष्ट रूप से जान जायेंगे कि भाषा के इन दो प्रयोगों में क्या भिन्नता है? छन्दोबद्ध कविता में गेयता तथा लय होती है, जबकि गद्य में भाषा व्याकरण के अनुरूप होती है। आरम्भ में समस्त संसार के साहित्य में काव्य रचना का प्रमुख स्थान था। भारत में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य इसी काव्य कला के अनुपम उदाहरण हैं। काव्य के अतिरिक्त नाटकों में काव्य भाषा का प्रयोग अधिक हुआ। प्रश्न यह कि आधुनिक युग से पहले गद्य की अपेक्षा कविता में ही रचना क्यों होती थी? उत्तर है कि कविता को गेयता, छन्दबद्धता और लय के कारण याद रखना सरल था। प्राचीन काल में मुद्रण कला का अभाव था, इसलिए पीढ़ी-दर-पीढ़ी साहित्य को मौखिक परम्परा से आगे बढ़ाने में कविता भाषा सहायक थी। प्राचीन काल में गद्य में भी साहित्य रचना होती थी लेकिन इन रचनाओं की संख्या सीमित थी। उस युग में भावों की अभिव्यक्ति के लिए जहाँ काव्य रचना की जाती थी वहाँ सैद्धान्तिक निरूपण के लिए गद्य का प्रयोग होता था। इसका सबसे अच्छा उदाहरण संस्कृत साहित्य का लक्षण ग्रन्थ '' काव्य प्रकाश'' है जिसमें भावों को प्रकट करने के लिए कविता का प्रयोग हुआ है तो सिद्धान्त निरूपण के लिए संस्कृत गद्य का।

अब आपके मन में रह रहकर यह प्रश्न उत्पन्न हो रहा होगा कि आधुनिक युग में कविता की प्रमुखता होने पर भी गद्य में लेखन क्यों आरम्भ हुआ। इसके क्या कारण थे? आदि काल में परस्पर विचार- विनिमय के लिए एक भिन्न प्रकार की भाषा का प्रयोग होता था। यह सामान्य बोल-चाल की भाषा थी, जो कि कविता भाषा से भिन्न थी। भाषा के इसी रूप को गद्य कहा गया था। भाषा का यह रूप जो उसकी व्याकरणिक संरचना के सबसे अधिक निकट हो, गद्य कहलाता है, जबकि पद्य में व्याकरणिक नियमों की नहीं छन्द, लय और भावों की प्रधानता होती है। गद्य लेखन पूर्व था लेकिन मुद्रण प्रणाली के अस्तित्व में आने के पश्चात् ही प्रचलन में आया। आज सभी पत्र पत्रिकाओं और पुस्तकों के लेखन में इस गद्य भाषा का प्रयोग हो रहा है।

1.4 हिन्दी गद्य की पृष्ठभूमि

हिन्दी गद्य साहित्य का उद्भव और विकास कैसे हुआ? इस पर चर्चा करने के साथ-साथ ही हम अब यहाँ पर यह भी विचार करेंगे कि हिन्दी गद्य किस भाँति विकसित होकर वर्तमान स्वरूप को प्राप्त हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी से पूर्व हिन्दी भाषा में गद्य रचनाएँ अधिक नहीं थी। उस समय ब्रजभाषा साहित्य की भाषा थी। जिसमें भाव-विचार की अभिव्यक्ति के लिए कविता भाषा का ही प्रयोग होता था लेकिन बोलचाल की भाषा गद्य थी। ब्रजभाषा के बोल-चाल के इस रूप का प्रयोग गद्य रचनाओं में होता था। हिन्दी गद्य विकास की दृष्टि से इन

Scanned by CamScanner

रचनाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए इन प्रारम्भिक रचनाओं के इस रूप से परिचय होना भी अनिवार्य है।

1.4.1 ब्रजभाषा गद्य:

जैसा कि आप जानते हैं कि विद्वानों की भाषा सामान्य जन की भाषा से भिन्न होती है। जिस समय ब्रजभाषा में कविता का सृजन हो रहा था, उसी समय जन सामान्य पारस्परिक बोल-चाल में ब्रजभाषा के गद्य रूप का प्रयोग करता था। लेकिन जब किसी संत महात्मा या कवि को अपने पंथ, सम्प्रदाय या मत के शुभ सन्देश सामान्य जनता तक पहुँचाने होते थे, वे अपनी कविता भाषा को छोड़कर ब्रजभाषा की बोल चाल की भाषा का ही प्रयोग करते थे। उनकी यही बोल चाल की भाषा धीरे-धीरे साहित्य की गद्य भाषा भी बनी। इसके साथ ही अनेक काव्य ग्रन्थों को सामान्य जनता तक पहुँचाने के लिए विद्वानों ने टीकाएं भी लिखीं, ये टीकाएं भी गद्य भाषा में होती थीं। इस युग की गद्य- रचना का एक उदाहरण दृष्टव्य है।

"सो वह पुरूष सम्पूर्ण तीर्थ स्थान करि चुकौ, अरू सम्पूर्ण पृथ्वी ब्राहमननि को दे चुको, अरू सहस्र जज्ञ कटि चुकौ, अरू देवता सब पूजि चुकौ, पराधीन उपरान्ति बन्धन नहीं, सुआधीन उपरान्त मुकति नाहीं, चाहि उपरान्त पाप नाहीं, अचाहि उपरान्त पुति नाहीं", (हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास- बाबू गुलाब राय -पृष्ठ 110)

उपरोक्त रचना अंश 'गोरख-सार' का गद्यांश है, जिसे संवत् 1400 की रचना माना जाता है। इसके अतिरिक्त महाप्रभु बल्लभाचार्य के पुत्र गोसाई विट्ठलनाथ जी ने ब्रज भाषा गद्य में 'श्रृगार मण्डन' लिखा, इनके बाद इनके पौत्र गोकुल नाथ ने ब्रजभाषा में चौरासी बैष्णव की वार्ता' तथा दो सौ बावन बैष्णवन की वार्ता'' लिखी, इनमें बैष्णव भक्तों की महिमा व्यक्त करने वाली कथाऐं लिखी हैं। इन सबकी गद्य भाषा व्यस्थित एवं बोल चाल रूप में हैं। इस भाषा का एक उदाहरण प्रस्तुत है।

''सो श्री नंदगाम में रहा हतो, सो खंडन, ब्राहमण शास्त्र पढयों हतो, सो जितने पृथ्वी पर मत हैं सबको खण्डन करतो, ऐसो वाको नेम हतो। याही से सब लोगन ने वाको नाम खण्डन पाखो हतो,'' (हिन्दी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल)

इसी भाँति 1660 विक्रम संम्वत् के आस-पास भक्त नाभादास की ब्रजभाषा गद्य में लिखी 'अष्टयाम' नामक रचना प्रकाश में आयी, इसकी भाषा सामान्य बोलचाल की है। उस युग में ब्रजभाषा में गद्य की रचना कम ही होती थी। लेकिन इसका मुख्य कारण था। ब्रजभाषा में गद्य की क्षमता का विकास न हो पाना, क्योंकि ब्रजभाषा एक सीमित क्षेत्र में बोली जाती थी। इसलिए वह ब्रज मण्डल के बाहर सम्पर्क भाषा के रूप में विकसित नहीं हो पायी, जिससे इसमें गद्य का विकास उस तरह नहीं हो पाया जिस तरह से होना चाहिए था। इसी कारण खड़ी बोली ही गद्य भाषा को विकसित करने में अधिक सार्थक हुई।

Scanned by CamScanner

1.4.2 खड़ी बोली में गद्य

ब्रजभाषा गद्य भाषा की परम्परा आगे न बढ़ाने के कारण खड़ी बोली में गद्य का विकास होने लगा, इसका सबसे बड़ा कारण था खड़ी बोली का जन साधारण की भाषा होना, ब्रजभाषा के पश्चात् इस भाषा में साहित्य का सृजन होने लगा, चूँकि खड़ी-बोली का क्षेत्रफल बड़ा था। इसलिए यह धीरे-धीरे पद्य और गद्य भाषा बनने लगी। फिर तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों ने भी खड़ी बोली के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

14वीं शताब्दी में खड़ी बोली दिल्ली के आस पास की भाषा थी। इसलिए मुगलकाल में यह शासन और जनता की सम्पर्क भाषा बनी। चूँकि मुगलों की मातृ भाषा फारसी थी, इसलिए जब यह खड़ी बोली के सम्पर्क में आयी तो इसकी शब्दावली खड़ी बोली में प्रवेश करने लगी और इससे फारसी मिश्रित खड़ी बोली का जन्म हुआ, शिक्षित लोग इस भाषा को फारसी लिपि में लिखने लगे, तब इस नई शैली को हिन्दवी, रेख्ता और आगे चलकर उर्दू नाम दिया गया। कवियों ने इस भाषा में शायरी आरम्भ कर दी, चौदवीं शताब्दी में अमीर खुसरो ने खड़ी बोली में रची गयी एक पहेली दृष्टव्य है-

एक थाल मोती से भरा, सबके ऊपर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाली फिरे, मोती उससे एक न गिरे।।

अमीर खुसरों के पश्चात् खड़ी-बोली का विकास दक्षिण राज्यों के रचनाकारों ने किया। दक्खिनी हिन्दी के रूप में वहाँ 14 वीं शताब्दी से 18 वीं शताब्दी तक अनेक ग्रन्थों की रचनाऐं हुई, जिनमें गद्य रचनाओं का भी मुख्य स्थान है। ख्वाजा बन्दा नवाज़ गैसू दराज (1322-1433) शाह मीराँ जी (-1496) बुरहानुद्दीन जानम (1544-1583) और मुल्ला वजही जैसे साहित्यकारों ने काव्य रचनाओं के साथ गद्य ग्रन्थ भी लिखे। मुल्ला वजही ने 1635 ई0 में अपने प्रसिद्ध गद्य-ग्रन्थ ''सब रस'' की रचना की जिसका आरम्भ इस प्रकार से होता है-

''नकल-एक शहर था। शहर का नाउं सीस्तान, इस सीस्तान के बादशाह का नाउं अक्ल, दीन और दुनिया का सारा काम उस तै चलता, उसके हुक्मवाज जरी कई नई हिलता..... वह चार लोकों में इज्जत पाए''। (दक्खिनी हिन्दीः विकास और इतिहास- डॉ0 परमानन्द पांचाल)।।

इसी दक्खिनी हिन्दी का एक रूप खड़ी बोली भी थी। यो तो यह खड़ी बोली प्रारम्भ में कबीर, खुसरो, कवि गंग और रहीमदास की कविता की भाषा बन चुकी थी, लेकिन गद्य भाषा के रूप में इसका प्रयोग अंग्रेज पादरी और अफसरों ने किया क्योंकि वे इस गद्य भाषा के माध्यम से जनता तक पहुँचता चाहते थे। सन् 1570 में मुगल बादशाह के दरबारी कवि गंग की प्रसिद्ध

Scanned by CamScanner

रचना ''चंद छन्द बरनन की महिमा'' में हिन्दी खडी़ बोली के जिस गद्य रूप के दर्शन होते हैं वह शिष्ट और परिष्कृत खडी़ बोली का गद्य है।

''इतना सुनके पातसाह जी श्री अकबर साह जी आध सेन सोना नरहा चारक को दिया। इनके डेढ़ सेर सोना हो गया, रास वचना पूरा भया, आम खास बारखास हुआ।'' (हिन्दी साहित्य का इतिहास - रामचन्द्र शुक्ल - पृष्ठ 281)

प्रस्तुत उदाहरण से ऐसा लगता है यह आज की शुद्ध परिमार्जित गद्य रचना है इसके पश्चात् खड़ी बोली ने साहित्य में अपना स्थान बना लिया और इससे तेजी से गद्य का विकास हुआ।

अभ्यास प्रश्न

आपने अब तक खडी़ बोली गद्य के प्रारम्भिक स्वरूप का परिचय प्राप्त किया। आपका ज्ञान जानने के लिए अब नीचे कुछ बोध प्रश्न दिये गये हैं। इनका उत्तर दीजिये। पाठ के अन्त में इन प्रश्नों के उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिये, इससे आपको ज्ञात होगा कि आपने ठीक उत्तर दिये हैं या नहीं।

(1) प्राचीन काल में साहित्य की रचना कविता में होती थीं, नीचे दिये कारणों में तीन सही और एक गलत है, गलत कारण के सामने (×) का निशान लगायें।

1. कविता में गेयता होती है, इससे इसको याद रखना सरल है।
2. प्राचीन काल में मुद्रण की आधुनिक प्रणाली का विकास नहीं हुआ था।
3. कविता अभिव्यक्ति का सबसे अक्षम रूप है।
4. प्राचीन काल में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाश नहीं होता था।

(2) भक्त नाभादास की ''अष्टयाम'' की रचना निम्नलिखित विक्रम सम्वत् में हुई। सही विकल्प के सामक्ष (√) चिह्न लगाए।

1. विक्रम सम्वत् 14400 में ( )
2. विक्रम सम्वत् 1500 में ( )
3. विक्रम सम्वत् 1660 में ( )
4. किक्रम सम्वत् 1700 में ( )

(3) नीचे कुछ पुस्तकों के नाम दिये गये हैं। उनके रचनाकारों का नाम लिखिए।

1. श्रृंगार मण्डन ( )

Scanned by CamScanner

2. चौरासी बैष्णव की वार्ता ( )
3. सब रस ( )
4. चंद छन्द बरनन की महिमा ( )

1.5 हिन्दी ग़द्य का उद्भव व विकास

खड़ी बोली गद्य का जो रूप वर्तमान में हमारे समक्ष है वह सहजता से विकसित नहीं हुआ, अपितु इसके इस रूप निर्माण में अनेक परिस्थितियों, संस्थाओं और व्यक्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही, जिनकी चर्चा हम यहाँ करने जा रहे हैं।

1.5.1 हिन्दी गद्य के उद्भव व विकास के कारण

भारत में अंग्रजी साम्राज्य की स्थापना से यहाँ परिवर्तनों की जो श्रृंखला प्रारम्भ हुई, इसका भारतीय जनजीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा; इनमें से कई परिवर्तनों का सीधा-सीधा सम्बन्ध हिन्दी गद्य विकास से भी है। इनका संक्षिप्त विवरण नीचे दिये जा रहा है। जैसा आप जानते हैं भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है। यहाँ हिन्दु, मुस्लमान, ईसाई सभी परस्पर मिलकर इस देश के विकास में अपना योगदान देते हैं। दक्षिण भारत के केरल और पूर्वी भारत के छोटे-छोटे राज्यों में ईसाई धर्म को मानने वालों की संख्या काफी है। आज से कई सौ वर्ष पूर्व ईसाई धर्म प्रचारक इस देश में आये। जब भारत पर अंग्रेजों का साम्राज्य हुआ तो इन ईसाई धर्म प्रचारकों ने अपनी गतिविधियाँ तेज कर दी, इनकी इन्ही गतिविधियों ने हिन्दी गद्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। चूँकि उस युग में जन सामान्य की बोल चाल की भाषा हिंदी गद्य थी। इसलिए इन धर्म प्रचारकों ने जनता में अपने धर्म का प्रचार करने के लिए छोटी-छोटी प्रचार पुस्तकों का निर्माण हिन्दी गद्य में किया। इसी क्रम में 'बाइबिल' का हिन्दी गद्यानुवाद प्रकाशित हुआ। जिससे हिंदी गद्य का काफी विकास हुआ।

नवीन आविष्कार- अंग्रेजों ने अपनी स्थति को और सुदृढ़ करने के लिए मुद्रण, यातायात और दूरसंचार के नये साधनों का प्रयोग किया। ईस्ट इंडिया कम्पनी ने सन् 1844 से सन् 1856 तक इस देश में रेल और तार के साधन जोड़ दिये थे। यातायात के तेज संसाधनों से पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। अनेक पुस्तक प्रकाशित हुई जिससे हिन्दी गद्य लेखन का भी तीव्रता से विकास हुआ।

शिक्षा का प्रसार- सन् 1835 में लार्ड मैकाले ने भारत में शिक्षा प्रसार के लिए अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को जन्म दिया। इससे पूर्व इस देश की शिक्षा फारसी और संस्कृत के माध्यम से दी जाती थी। लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति से जहाँ-जहाँ भी शिक्षा दी जाती थी, उन स्कूल कॉलेजों में हिन्दी, उर्दू पढ़ाने की विशेष व्यवस्था होती थी। सन् 1800 ई0 में स्थापित फोर्ट विलियम

Scanned by CamScanner

कॉलेज में सन् 1824 में हिन्दी पढ़ाने का विशेष प्रबन्ध हुआ। इससे पूर्व सन् 1823 में आगरा कॉलेज भी स्थापना हुई जिसमें हिन्दी शिक्षा का विशेष प्रबन्ध हुआ। इसने कॉलेजों में हिन्दी शिक्षा समुचित रूप से संचालित हो इसके लिए हिन्दी के अच्छे पाठ्यक्रम बनाये। इस शिक्षा विस्तार से भी हिन्दी गद्य का अच्छा विकास हुआ।

समाज सुधार आन्दोलन- 19 वीं शताब्दी समाज सुधार की शताब्दी थी। इस सदी में भारतीय समाज में व्याप्त बुराइयों को समाप्त करने के लिए अनके आन्दोलन हुए। चूँकि समाज सुधार के आन्दोलनों को जिन नेताओं ने संचालित किया उन्हें जनता तक अपनी बात पहुँचाने के लिए भाषा की आवश्यकता पड़ी। 'ब्रहम समाज' के संस्थापक राजा राममोहन राय ओर आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द ने अपने-अपने मतों को समाज तक पहुँचाने के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया वह हिन्दी भाषा थी। इसी से हिन्दी गद्य को एक नया रूप मिला।

पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन- मुद्रण की सुविधा से पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन होने लगा जिनके माध्यम से अनके गद्य लेखक लिखने लगे। 30 मई सन् 1826 ई0 में कलकत्ता से पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने 'हिन्दी' के प्रथम पत्र 'उदन्त-मार्तण्ड' का प्रकाशन प्रारम्भ किया। यह हिन्दी का साप्ताहिक पत्र था। हिन्दी के पाठकों की संख्या कम हाने के कारण यह 4 दिसम्बर सन् 1827 को बन्द हो गया। इस पत्र के माध्यम से भी हिन्दी गद्य का विकास हुआ। 9 मई सन् 1829 को कलकत्ता से हिन्दी के दूसरे पत्र 'बंगदूत' का प्रकाशन हुआ। इसी तरह कोलकाता से प्रजामित्र' सन् 1845 में 'बनारस' से 'बनारस अखबार, सन् 1846 में 'मार्तण्ड' जैसे समाचार पत्रों का प्रकाशन हुआ। इन सबकी गद्य भाषा हिन्दी थी। इस तरह 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध में हिन्दी पत्र पत्रिकाओं की बाढ़ सी आ गयी। इन्ही पत्र पत्रिकाओं ने हिन्दी गद्य को और अधिक विकसित और परिमार्जित किया।

1.5.2 प्रारम्भिक गद्य लेखन

सन् 1803 ई0 में फोर्ट विलियम कालेज कलकत्ता के हिन्दी उर्दू प्राध्यापक जॉन गिलक्राइस्ट ने हिन्दी और उर्दू में पुस्तकें लिखवाने के लिए कई मुंशियों की नियुक्ति की। इन मुंशियों में 'नियाज' मुंशी इंशा अल्ला खाँ जैसे हिन्दी-उर्दू के विद्वान थे जिन्होंने हिन्दी गद्य को एकरूपता प्रदान की।

मुंशी सदासुखलाल नियाज- जन्म सं. 1803 मृत्यु सं. 1881 - दिल्ली निवासी मुंशी सदासुखलाल, फारसी के अच्छे कवि और लेखक थे। इन्होंने 'बिष्णु पुराण' के उपदेशात्मक प्रसंग को लेकर एक पुस्तक लिखीं इसके पश्चात् मुंशी जी ने श्रीमद्भागवत कथा के आधार पर 'सुख सागर' की रचना की जिसकी गद्य व्यवस्थित और निखरी हुई है। इनकी इस गद्य भाषा का एक उदाहरण निम्नवत् है-

Scanned by CamScanner

''मैत्रेय जी ने कहा'' हे विदुर प्रचेता लोग साधु व बैष्णव की बड़ाई व परमेश्वर के मिलने के उपाय महादेव जी से सुनकर आनन्द पूर्वक बीच पढ़ने वाले स्रोतों को व करने ध्यान नारायण जी को लीन हुए। जब उनको इस हजार वर्ष हरि भजन करते बीत गये तब परमेश्वर ने प्रसन्न होकर दर्शन देके बड़े हर्ष से उन्हें वरदान दिया''(हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास- बाबू गुलाब राय - पृष्ठ 112)

मुंशी इंशा अल्ला खाँ- (जन्म सं0 1818- मृत्यु सं0 1857) मुर्शिदाबाद में जन्म लेने वाले मुंशी इंशा अल्ला खाँ उर्दू के बहुत अच्छे शायर थे। इन्होंने सम्वत् 1855 और सम्वत् 1860 के मध्य 'उदयभान चरित' या रानी केतकी की कहानी' लिखी। इनकी गद्य भाषा संस्कृत मिश्रित हिन्दी थी। इनकी गद्य भाषा का एक उदाहरण इस प्रकार है-

''कोई क्या कह सके, जितने घाट दोनों नदियों के थे। पक्के चाँदी के से होकर लोगों को हक्का-बक्का कर रहे थे। नवाड़े, बन्जरे, लचके, मोरपंखी, श्याम सुन्दर, राम सुन्दर और जितनी ढब की नावे थी। सुनहरी, रूपहरी, सजी-सजाई। कसी-कसाई सौ-सौ लचके खतियाँ फिरतियाँ थी''(हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास- बाबू गुलाब राय - पृष्ठ 114)

श्री लल्लू लाल जीः- (जन्म सं0 1820- मृत्यु सं0- 1882) आगरा निवासी लल्लू जी 'लाल' गुजराती ब्राहमण थे। फोर्ट विलियम कॉलेज में नियुक्ति के बाद इन्होंने सम्वत् 1860 में भागवत पुराण के दशम् स्कंध के आधार पर प्रेम सागर नामक ग्रन्थ का हिन्दी गद्य में सृजन किया। इसके अतिरिक्त इन्होंने ' वैताल पच्चीसी'' 'सिहासन बत्तीसी' ,'माधव विलास' तथा 'सभा विलास' नामक ग्रन्थ भी लिखे। इनकी गद्य भाषा का एक उदाहरण निम्नवत् है।

''महाराज इसी नीति से अनेक-अनेक प्रकार की बात कहते-कहते और सुनते-सुनते जब सब रात व्यतीत भई और चार घड़ी पिछली रही तब नन्दराय जी से उधौ जी ने कहा कि महाराज अब दधि मथनी की विरियाँ हुई, जो आकी आज्ञा पाऊँ तो युमना स्नान कर आऊँ'' (प्रेम सागर)

पंडित सदलामिश्रः- (जन्म सम्वत् 1825-मृत्यु सं. 1904) बिहार निवासी पंडित सदलमिश्र ने अपनी पुस्तक ''नासिकेतोपाख्यान'' फोर्ट विलियम कॉलेज में लिखी। इनकी भाषा लल्लू जी लाल; की तरह ही ब्रज भाषा के शब्दों से ओत प्रोत है। जिसको एक उदाहरण प्रस्तुत है-

''इस प्रकार नासिकेत मुनि यम की पुरी सहित नरक वर्णन कर फिर जौन-जौन कर्म किये से जो भोग होता ळै सो ऋषियों को सुनाने लगे कि गौ, ब्राहमण माता -पिता , मित्र, बालक, स्त्री, स्वामी, वृद्ध, गुरू, इनका जो बध करते हैं वे झूठी साक्षी भरते, झूठ ही कर्म में दिन रात लगे रहते हैं।" (नासिकेतोपाख्यान)

Scanned by CamScanner

1.5.3 अंग्रेजों की भाषा नीति

अंगेजों के भारत आगमन से पूर्व यहाँ की राज भाषा फारसी थी। लार्ड मैकाले के प्रयत्नों से सन् 1835 में अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार हुआ। सन् 1836 तक अदालतों की भाषा फारसी थी लेकिन अंग्रजों ने अपनी भाषाई नीति के अन्तर्गत सन् 1836 में सयुक्त प्रान्त के सदर बोर्ड अदालतों की भाषा 'हिन्दी' कर दी, लेकिन इसके पश्चात् अंग्रेजों की ओर से हिन्दी के विकास के लिए कुछ और नहीं किया गया। ऐसे समय में राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' और राजा लक्ष्मणसिंह के द्वारा हिन्दी के विकास के लिए जो कार्य किये गये वे उल्लेखनीय है-

राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द- (जन्म सं. 1823- मृत्यु सं. 1895) राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्दी शिक्षा विभाग में निरीक्षक के पद पर थे। ये हिन्दी के प्रबल पक्षधर थे इसलिए ये इसे पाठ्यक्रम की भाषा बनाना चाहते थे। चूँकि उस समय साहित्य के पाठ्यक्रम के लिए कोई पुस्तकें नहीं थी इसलिए इन्होंने स्वयं कोर्स की पुस्तकें लिखी और इन्हें हिन्दी पाठ्यक्रमों में स्थान दिलाया। इन्ही के प्रयत्नों से शिक्षा जगत ने हिन्दी को कोर्स की भाषा बनाया। इस बाद उन्होंने बनारस से 'बनारस अखबार निकाला। इसीके द्वारा राजा शिवप्रसाद ''सितारे हिन्द'' ने हिन्दी का प्रचार प्रसार किया। ये विशुद्ध हिन्दी में लेख लिखते थे। राजा जी ने स्वयं हिन्दी कोर्स लिए पुस्तके ही नहीं लिखी अपितु पंडित श्री लाल और पंडित बंशीधर को भी इस कार्य के लिए प्रेरित किया। इसके अतिरिक्त इन्होंने 'वीरसिंह का वृतान्त' आलसियों का कोड़ा जैसी रचनाओं का सृजन भी किया। इनकी गद्य भाषा कितनी प्रभावशाली और सरल थी, इसका उदारहण ''राजा भोज का सपना'' का यह गद्यांश है।

''वह कौन सा मनुष्य है जिसने महाप्रतापी राजा भोज का नाम न सुना हो। उनकी महिमा और कीर्ति तो सारे जगत में व्याप्त रही है। बड़े-बड़े महिपाल उसका नाम सुनते ही काँप उठते और बड़े-बड़े भूपति उसके पाँव पर अपना सिर नवाते।''

राजा जी उर्दू के पक्षपाती भी थे। सन् 1864 में इन्होंने ''इतिहास तिमिर नाशक'' ग्रन्थ लिखा।

राजा लक्ष्मण सिंह (जन्म सम्वत् 1887- मृत्यु सम्वत् 1956)- आगरा निवासी राजा लक्ष्मणसिंह हिन्दी और उर्दू को दो भिन्न-भिन्न भाषाएँ स्वीकारते थे। फिर भी ये हिन्दी उर्दू शब्दावली प्रधान गद्य भाषा का प्रयोग करते थे। राजा लक्ष्मणसिंह ने कालिदास के 'मेघदूतम' अभिज्ञान शांकुन्तलम् और रघुवंश का हिन्दी अनुवाद किया। इन्होंने हिन्दी के गद्य विकास के लिए सन् 1841 में 'प्रजा हितैषी' पत्र भी सम्पादित और प्रकाशित किया। इनकी गद्य भाषा कितनी उत्कृष्ट कोटि की थी। प्रकाशित उदाहरण अभिज्ञान शाकुन्तलम् का यह अनुदित ग़द्य है-

अनसुया (हौले प्रियबंदा से) सखी मैं भी इसी सोच विचार में हूँ। अब इससे कुछ पूछूँगी। (प्रकट) महात्मा तुम्हारे मधुर वचनों के विश्वास में आकर मेरा जी यह पूछने को चाहता है क तुम किस

Scanned by CamScanner

कितनी उत्कृष्ट कोटि की थी। प्रकाशित उदाहरण अभिज्ञान शाकुन्तलम्

अनसुया (हौले प्रियबंदा से) सखी मैं भी इसी सोच विचार में हूँ। अब इ
महात्मा तुम्हारे मधुर वचनों के विश्वास में आकर मेरा जी यह पूछने को

राजवंश के भूषण हो और किस देश की पुजा को विरह में व्याकुल छोड़ कर यहाँ पधारे हो? क्या कारण है? (हिन्दी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृष्ठ-300)

राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' और राजा लक्ष्मण सिंह के अलावा कई अनेक प्रतिभाशाली लेखकों ने हिन्दी गद्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। जिन गद्य लेखकों ने अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद किये तथा कई पाठ्य पुस्तकें लिखी उनमें , श्री मथुरा प्रसाद मिश्र, श्री ब्रजवासी दास, श्री रामप्रसाद त्रिपाठी श्री शिवशंकर, श्री बिहारी लाल चौबे, श्री काशीनाथ खत्री, श्री रामप्रसाद दूबे आदि प्रमुख हैं। इसी अवधि में स्वामी दयान्द सरस्वती ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' जैसे ग्रन्थ की हिन्दी गद्य में रचना करके हिन्दू धर्म की कुरीतियों को समाप्त किया। हिन्दी गद्य के विकास में जिन और लेखकों का नाम बड़े आदर से लिया जाता है उनमें से बाबू नवीन चन्द्र राय तथा श्री श्रद्धाराम फुल्लौरी हैं।

बाबू नवीन चन्द्र राय ने सन् 1863 और सन् 1880 के मध्य हिन्दी में विभिन्न बिषयों की पुस्तकें लिखी और लिखवाई, साथ ही ब्रहम समाज के सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार करने के लिए सन् 1867 में ज्ञानप्रदायिनी पत्रिका का प्रकाशन किया। इसी तरह श्री श्रृद्धानन्द फुल्लौरी ने 'सत्यामृत प्रवाह', 'आत्म चिकित्सा', तत्वदीपक, 'धर्मरक्षा', उपदेश संग्रह' पुस्तकें लिखककर हिन्दी गद्य के विकास एक नयी दिशा प्रदान की।

अभ्यास प्रश्न

(4) हिन्दी गद्य विकास के कारण थे-

1. ईसाई धर्म प्रचारकों का योगदान ( )
2. मुद्रण प्रणाली का प्रारम्भ ( )
3. समाज सुधार आन्दोलन ( )
4. उपरोक्त सभी ( )

(5) 'सत्यार्थ प्रकाशन' की रचना की-

1. स्वामी विवेकानन्द ने ( )
2. राजा राय मोहन राय ने ( )
3. स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ( )
4. पंडित श्रद्धाराम फुल्लौरी ने ( )

(6) पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने कोलकाता से एक पत्र निकाला।

1. बंगदूत

Scanned by CamScanner

1.6 भारतेन्दु युग (सन् 1868-1900)

19 वीं सदी के उत्तरार्द्ध तक हिन्दी गद्य का व्यापक प्रसार हुआ और इससे साहित्य रचना के पर्याप्त अवसर प्राप्त हुए। इसी अवधि में महान साहित्यकार भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने हिन्दी साहित्य संसार में प्रवेश किया। जिनके प्रयत्नों से हिन्दी गद्य को नयी दिशा प्राप्त हुई। भारतेन्दु हरिशचन्द्र का जन्म 2 सितम्बर सन् 1850 ई. को बनारस के एक धनी परिवार में हुआ। इनके साहित्य प्रेमी पिता श्री गोपाल चन्द्र ने नहुष वध नाटक तथा कुछ कविताऐं लिखी। पिता के इन्ही संस्कारों की छाप भारतेन्दु हरिशचन्द्र पर पड़ी इसलिए इन्होंने मात्र ग्यारह वर्ष की अवस्था में काव्य रचना प्रारम्भ कर दी। विभिन्न भाषाओं के जानकार भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने युवावस्था में कई नाटक और काव्यों के लेखन के अतिरिक्ति 'कविवचन सुधा; हरिशचन्द्र मैगजीन' तथा हरिशचन्द्र चन्द्रिका' नामक पत्रिकाओं का भी सम्पादन किया। इन्ही पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी के अनेक गद्य लेखक प्रकाश में आये। भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने उस युग तक प्रयुक्त खड़ी बोली के गद्य को परिमार्जित किया। साथ ही भारतेन्दु जी ने गद्य के विभिन्न क्षेत्रों नाटक,

निबन्ध, समालोचना आदि विधाओं में नयी परम्परा का सूत्रपात किया। 35 वर्ष की अल्पायु में हिन्दी साहित्य के लिए किये गये इनके कार्यों को हिन्दी गद्य विकास की दिशा में सर्वोकृष्ट कार्य स्वीकारा जाता है। ये अपनी भाषा के विकास के प्रबल पक्षधर थे। इनका यह मानना था।

'' निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा शान के, मिटत न हिय को शूल''।

भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने ''वैदिक हिंसा, हिंसा न भवति'', प्रेम योगिनी, विषस्य विषऔषधम्, श्री चन्द्रावली नाटिका, भारत दुर्दशा, नील देवी और अंधेर नगरी जैसे मौलिक नाटक लिखे। इनके अनुदित नाटक हैं- ''विद्यासुन्दर, पाखण्ड विडम्बन, मुद्राराक्षस, सत्य हरिशचन्द्र, कर्पूर मंजरी, दुर्लभ बुंध आदि। स्वयं लेखन के अतिरिक्त भारतेन्दु ने अपने समय के अनेक लेखकों को गद्य लेखन के लिए प्रेरित किया। इससे लेखकों की एक ऐसी मंडली बनी जिसने भारतेन्दु की इस परम्परा को आगे बढ़ाया। भारतेन्दु की इसी परम्परा को ओग बढ़ाने वाले लेखकों में थे- पंडित प्रतापनारायण मिश्र, पंडित बालकृष्ण भट्ट, पंडित बद्री नारायण चौधरी प्रेमधन, श्री जगन्नाथ दास 'रत्नाकर', श्री बालमुकुन्द गुप्त, श्रीनिवासदास, श्री राधाकृष्ण दास आदि इन सभी लेखकों ने गद्य की निबन्ध, नाटक, उपन्यास, एकांकी आदि विधाओं पर लेखनी चलायी।

पं0 प्रताप नारायण मिश्र ने कालि कौतुक व रूकमणि परिणय, हठी हमीर और गौ संकट जैसे नाटकों का सृजन किया। इसके अतिरिक्त पेट, मुच्छ, दान, जुआ आदि विषयों पर निबन्ध लिखे। इसके अतिरिक्त ब्राहमण' पत्रिका का प्रकाशन कर हिन्दी गद्य विधा को आगे बढ़ाया। पंडित बालकृष्ण भट्ट इसी श्रखंला की दूसरी कड़ी थे, जिन्होंने सम्वत् 1934 में 'हिन्दी प्रदीप' मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया। इन्होंने विभिन्न विषयों पर निबन्ध प्रकाशित किये। पंडित भट्ट ने पदमावती, शिशुपाल वध, चन्द्रसेन', जैसे नाटक सौ अजान एक सुजान, नूतन ब्रहमचारी, जैसे उपन्यास और आँख, नाक, कान जैसे विषयों पर ललित निबन्ध लिखे। पंडित बद्रीनारायण चौधरी ने इसी युग में, 'आनन्द कांदविनी, मासिक और 'नीरद' जैसे साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया। भारत सौभाग्य' वीरांगना रहस्य जैसे नाटक लिखकर चौधरी जी ने हिन्दी गद्य विधा को एक नया रूप प्रदान किया। भारतेन्दु युग के जिन प्रतिष्ठित साहित्यकारों की रचनाओं की आज भी प्रशंसा की जाती है वे हैं, श्री बालमुकुद गुप्त , लाल श्रीनिवास दास, श्री राधाकृष्ण दास, श्री बालकुकुद गुप्त ने हिन्दी गद्य की निबन्ध विधा को अत्यधिक समृद्धि प्रदान की। इनकी शिवशम्भू के चिट्ठे प्रसिद्ध रचना है। लाल श्रीनिवास दास ने इसी अवधि में 'प्रह्लाद चरित्र, तप्ता संवरण, रणधीर प्रेम मोहनी, संयोगिता स्वयंवर जैसे नाटक और 'परीक्षा- गुरू जैसा उपन्यास लिखा। श्री राधाकृष्णदास इस युग के प्रसिद्ध नाटकार थे। जिन्होंने दुःखिनी बाला, 'महारानी पदमावती, महाराणा प्रताप' सतीप्रताप जैसे नाटक तो 'निस्सहाय हिन्दु' जैस उपन्यास की रचना की।

Scanned by CamScanner

1.7 द्विवेदी युग (सन् 1900-1920)

पूर्व में हम यह चर्चा कर चुके हैं कि भारतेन्दु हरिचन्द्र जैसे प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति से प्रेरणा प्राप्त कर अनेक लेखकों ने हिन्दी गद्य को समृद्ध किया। इस मंडली ने हिन्दी साहित्य के अनेक अध्येता और हिन्दी गद्य विकास और प्रचार के लिए अनेक मौलिक और अनुदित ग्रन्थ तैयार किये। इतना सब कुछ होने पर भी इस युग के गद्य लेखकों की गद्य भाषा में कई त्रुटियाँ मिलती हैं। इन कमियों को दूर करने के लिए जिस प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार ने अपनी लेखनी उठाई उन्हें साहित्य संसार पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम से जानता है। इन्होंने अपनी साहित्यिक पत्रिका 'सरस्वती' के माध्यम से हिन्दी भाषा का परिमार्जन किया।

हिन्दी की प्रसिद्ध पत्रिका 'सरस्वती' का प्रकाशन इंडियन प्रेस इलाहाबाद द्वारा सन् 1900 से प्रारम्भ किया गया। इस पत्रिका ने सन् 1903 से सन् 1920 तक आचार्य महावीर द्विवेदी के सम्पादकत्व में जितनी प्रतिष्ठा प्राप्त की उतनी अन्य सम्पादकों के सम्पादकत्व में नहीं। 'सरस्वती' पत्रिका ने उस समय राष्ट्रीय वाणी को दिशा देने के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश कर यह सिद्ध किया कि हिन्दी भाषा में भी कठिन से कठिन विषयों को प्रस्तुत करने की क्षमता है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा सम्पादित इस पत्रिका ने हिन्दी को गद्य की सभी विधाओं से सम्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। तथा इसमें व्याप्त अनगढ़पन और अराजकता को समाप्त कर इसे एक सुन्दर और सुगढ़ भाषा में प्रस्तुत किया।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1861 तथा मृत्यु 1938 में हुई थी। ये एक कवि होने के साथ-साथ एक निबन्धकार और समालोचक भी थे। इनका एक और सबसे बड़ा कार्य यह था कि इन्होंने 'सरस्वती' में प्रकाशन के लिए आने वाली रचनाओं की भाषा को सुधार कर उसे शुद्ध और एक रूप किया। आचार्य द्विवेदी की इच्छा थी कि खड़ी बोली हिन्दी अपना मानक रूप ग्रहण करें क्योकि इसके बिना किसी महान साहित्य की रचना करना सम्भव नहीं।

द्विवेदी जी ने उस युग की राष्ट्रीय चेतना और नव जागरण की भावना को पूर्ण आत्मसात किया। उन्होंने साहित्य के मध्य युगीन आदर्शों का विरोध तथा रीतिकालीन भाव बोधों और कलारूपों को अस्वीकार किया। इन्होंने अपने युग के साहित्यकारों से साहित्य को समाज से जोड़ने के लिए निवेदन किया। इन्होंने स्पष्ट घोषणा की कि किसी भी देश की उन्नति अगर देखनी हो तो उस देश के साहित्य को अवलोकन करना चाहिए। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' के माध्यम से प्रेमचन्द, मैथलीशरण गुप्त, माधव मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त, नाथूराम शर्मा, शंकर, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, श्री पद्मसिंह शर्मा और अयोध्या सिंह उपाध्याय ''हरिऔध' के साहित्य को समाज तक पहुँचाया।

Scanned by CamScanner

द्विवेदी ने गद्य की विभिन्न विधाओं में साहित्य लिखा गया। इस युग में निबन्ध, नाटक , उपन्यास, कहानी, आलोचना जैसी गद्य विधाओं ने अपना स्वतन्त्र रूप, ग्रहण किया जिनके माध्यम से अनेक साहित्यकार और रचनाएँ प्रकाश में आयीं। इसी काल में कहानी, उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द, नाटक के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद, निबन्ध के क्षेत्र में बालमुकुन्द गुप्त, सरदार पूर्णसिंह, रामचन्द्र शुक्ल तथा आलोचना के क्षेत्र में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ऐतिहासिक कार्य किये। इसके साथ ही इस काल में जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण या यात्रा वृतान्त जैसी कई नयी गद्य विधाओं में भी लेखन कार्य प्रारम्भ हुआ।

नाटक- हिन्दी नाटकों का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिचन्द्र ने अनेक नाटक लिख कर किया। भारतेन्दु युग के प्रायः सभी लेखकों ने नाटक लिखे। इसी का प्रभाव द्विवेदी युग पर भी पड़ा और उस युग में भी कई नाटक लिखे गये। इस युग में अंग्रेजी, बंगला और संस्कृत के नाटक अनुदित होकर हिन्दी में आये। अनुदित नाटकों में बंगला नाटककार द्विजेन्द्रलाल राय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, गिरिश बाबू, विद्या विनोद, अंग्रजी नाटकार, शेक्सपियर, संस्कृत के नाटककार, कालिदास, भवभूति आदि नाटककारों के नाटकों के हिन्दी अनुवाद प्रकाश में आये। मौलिक नाट्य लेखन में पंडित किशोरीलाल गोस्वामी- चौपट चेपट, और मयंक मंजरी, अयोध्या प्रसाद उपाध्याय 'हरिऔध'- रूक्मणी परिणय और प्रधुम्न विजय बाबू शिवनन्दन सहाय सुदमा नाटक, जैसे नाटक लिखे गये, ये सभी सामान्य नाटक थे जिनपर फारसी थियेटर का प्रभाव पड़ा, लेकिन साहित्यक दृष्टि से ये उच्चकोटि के नाटक नहीं थे। नाटाकों के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद ने उच्च कोटि का कार्य किया जो कि उच्चकोटि की साहित्यकता से ओत प्रोत हैं।

उपन्यास- उपन्यास आधुनिक युग का महाकाव्य कहलाता है। हिन्दी में जैसे ही गद्य का विकास हुआ, उपन्यास विधा भी अस्तित्व में आयी। भारतेन्दु युग से पूर्व श्रृद्धाराम फुल्लौरी ने 'भाग्यवती' उपन्यास लिखकर हिन्दी में उपन्यास विधा का प्रारम्भ किया। इसके बाद भारतेन्दु युग में लाला श्री निवासदास ने 'परीक्षा गुरू' उपन्यास की रचना की। भारतेन्दु युग में श्री राधाकृष्ण दास का 'निःसहाय हिन्दु' पंडित बालकृष्ण भट्ट का 'नूतन ब्रह्मचारी' (सन् 1892) श्री लज्जाराम शर्मा का 'स्वतन्त्र रमा और परतन्त्र लक्ष्मी' (सन् 1899) और धूर्त रसिकलाल, (सन् 1907) जैसे उपन्यास काफी लोकप्रिय हुए। द्विवेदी युग के उपन्यास कारों में सबसे समादृत श्री देवकीनन्दन खत्री हैं। जिन्होंने 'चन्द्रकान्ता' और चन्द्रकान्ता सन्तति' जैसे ऐयारी और तिलस्मी उपन्यासों के माध्यम से जिस गद्य भाषा का प्रयोग किया, वह उर्दू हिन्दी मिश्रित भाषा है। द्विवेदी युग में पंडित किशोरी लाल गोस्वामी ने करीब छोटे-छोटे 65 उपन्यास लिखे। साथ ही इन्होंने 'उपन्यास' नामक एक मासिक पत्र भी निकाला। इनके उपन्यासों में 'चपला' 'तारा' तरूण, तपस्विनी, रजिया वेग़म, लीलावती, लवंगलता आदि उपन्यास प्रसिद्ध हैं। इसी युग में 'हरिऔध' जी ने 'ठेठ हिन्दी का ठाठ', और अधखिला फूल, लज्जाराम मेहता ने हिन्दु धर्म, आदर्श दम्पत्ति◌ा, बिगड़े का सुधार,आदि उपन्यास लिखे।

Scanned by CamScanner

[redacted]

4. द्विवेदी युग के संन्दर्भ में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की भूमिका का विवेचन चार पंक्तियों में कीजिये।

1.8 प्रेमचन्द और उनके पश्चात्

द्विवेदी के पश्चात् जिन साहित्यकारों ने गद्य साहित्य को नयी दिशा प्रदान की, मुंशी प्रेमचन्द भी उनमें से एक हैं। मुंशी प्रेमचन्द ने यद्यपि लेखन का कार्य द्विवेदी युग से ही आरम्भ कर लिया था लेकिन इनकी रचनाओं में एक नवीनता के दर्शन होते हैं। इसीलिए इनकी उपन्यास और कहानी विधाओं से एक नये युग का प्रारम्भ होता है। प्रेमचन्द ने इस युग में कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध और जीवनियाँ लिखी। इनकी इन सभी विधाओं में समाज और दशा की वास्तविक स्थिति के दर्शन होते हैं। प्रेमचन्द ने अपने जीवन में लगभग 300 कहानियों की रचना की। इनकी ये सभी कहानियाँ मानसरोवर के आठ भागों में संकालित हैं। इनमें से ईदगाह,

कफन, शंतरंज के खिलाड़ी, पंचपरमेश्वर, अलग्योझा, बड़े घर की बेटी, पूस की रात', नमक का दरोगा, ठाकुर का कुआँ, श्रेष्ठ कहानियाँ हैं।

उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द उपन्यास सम्राट कहलाते हैं। इस विधा में इन्होंने देश की सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। इनके रंगभूमि, कर्मभूमि, सेवासदन, गबन जैसे उपन्यास देश की इन्ही समस्याओं को उजागर करते हैं। प्रेमचन्द के इस युग में उपन्यास साहित्य को समृद्ध करने में जिन साहित्यकारों का योगदान रहा है उनमें जयशंकर प्रसाद, आचार्य चतुरसेन, विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक, बेचेन पाण्डेय, इलाचन्द्र जोशी, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', भगवती प्रसाद वाजपेयी, भगवती चरण वर्मा, उपेन्द्रनाथ 'अस्क' जैनेन्द्र अज्ञेय, यशपाल, नागार्जुन, फणीश्वर नाथ रेणु, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, अमृतलाल नागर मुख्य हैं। इसी तरह प्रेमचन्द के समकालीन जिन कहानीकारों ने हिन्दी कहानी को एक नयी दिशा प्रदान की, उनमें उपरोक्त उपन्यासकारों के साथ-साथ अमृराय, मन्मथनाथ,गुप्त, रांगेय राघव, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, मार्कण्डेय, उषा प्रियवंदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोवती का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है।

प्रेमचन्द युग के नाटकों में जयशंकर प्रसाद के नाटय आदर्शवादी नाटक हैं,। इसलिए जयशंकर प्रसाद को इस युग का युग प्रवर्तक नाटककार माना जाता है। इनके ऐतिहासिक नाटकों में राष्ट्रीय चेतना और भारतीय संस्कृति की झलक सर्वत्र दिखायी देती है। कामना, जनमेजय का नाग यज्ञ, राजश्री, विशाखा, अजातशत्रु, स्कंदगुप्त, चन्द्र गुप्त और ध्रुवस्वामिनी इनके बड़े और महत्व वाले नाटक हैं। जयशंकर प्रसाद के अतिरिक्त इस युग के अन्य नाटककारों में प्रमुख हैं श्री जगदीश चन्द्र माथुर- कोणार्क, पहला राजा, शारदीय, मोहन राकेश- आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, और आधे अधूरे, इनके अतिरिक्त हरिकृष्ण प्रेमी, उदयशंकर भट्ट, गोविन्द बल्लभ पन्त, लक्ष्मी नारायण मिश्र, सेठ गोविन्द दास, जगन्नाथ दास मिलिन्द, लक्ष्मी नारायण लाल, विष्णु प्रभाकर, ब्रजमोहन शाह, रमेश बक्षी, मुद्राराक्षस, इन्द्रजीत भाटिया भी उच्चकोटि के नाटकार हैं।

प्रेमचन्द युग में नाटकों के अतिरिक्त एकांकी भी लिखे गये। जिन्हें उपरोक्त नाटकारों के अतिरिक्त कुछ एकांकीकारों में डॉ0 रामकुमार वर्मा का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। पृथ्वीराज की आँखें, रेशमी राई, कौमुदी महोत्सव, राजरानी सीता इनके प्रसिद्ध एकांकी हैं। प्रेमचन्द के युग में नाटक, उपन्यास, काहनी, एकांकी, के अतिरिक्त निबन्ध, आलोचना, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण आदि गद्य विधाओं की भी पर्याप्त प्रगति हुई। इस युग के निबन्धकारों में आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, बाबू गुलाब राय, वासुदेव शरण अग्रवाल सदगुरूशरण अवस्थी, शांतिप्रिय द्विवेदी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ0 नगेन्द्र, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, विष्णुकान्त शास्त्री, आदि निबन्धकार मुख्य हैं। प्रेमचन्द जी के युग में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने जिस समालोचना साहित्य का श्री गणेश किया उसी को आगे बढाने

Scanned by CamScanner

15:44
4G 3G 26
BAHL-101.pdf

कहानी- वैसे तो भारत में कहानी 'कथा' के रूप में आदिकाल से ही चली आ रही थी। किन्तु जिसे वर्तमान की कहानी कहा जाता है। उसका यह स्वरूप काफी नहीं है। वैसे तो समीक्षक मुंशी इंशा अल्ला खाँ की लिखी ''रानी केतकी की कहानी'' को हिन्दी की प्रथम कहानी के पद पर विभूषित करते हैं लेकिन इसमें वर्तमान की कहानी के स्वरूप का अभाव है। इसके पश्चात् राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द ने 'राजा भोज का सपना' की रचना की, लेकिन ये सभी कहानी लेखन के छोटे प्रयास थे। हिन्दी कहानी की रचना का प्रारम्भ बीसवीं शदी के प्रथम दशक में हुआ। जबकि हिन्दी के प्रसिद्ध कहानीकार मुंशी प्रेमचन्द और जयशंकर प्रसाद ने कहानी लिखना प्रारम्भ किया। सन् 1911 में प्रसाद जी की ग्राम कहानी प्रकाशित हुई तो सन् 1915 में चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की प्रसिद्ध कहानी ''उसने कहा था'' का प्रकाशन हुआ। सन 1915-16 से पूर्व मुंशी प्रेमचन्द ने उर्दू में कई कहानियाँ लिखी। इस तरह द्विवेदी युग में जिन कहानीकारों ने कहानियाँ लिख उनमें श्री विश्म्भर नाथ शर्मा, कौशिक, श्री सुदर्शन, श्री राधिका रमण प्रसाद सिंह, श्री जी.पी0 श्रीवास्तव, आचार्य चतुरसेन, आदि कहानीकार मुख्य हैं।

निबन्ध और समालोचना- निबन्ध और समालोचना हिन्दी गद्य की अभिन्न गद्य विधाएँ हैं। जिनका विकास भारतेन्दु युग से होने लगा था। भारतेन्दु युग के निबन्धों में जहाँ राष्ट्र और समाज के प्रति चिन्ता व्यक्त की गयी, वहाँ इनमें तीखा व्यंग्य और विनोद भी दिखाई दिया। द्विवेदी युग के निबन्धकारों में श्री बालमुकुन्द गुप्त ने इसी शैली को अपनाकर अपने निबन्धों को चर्चित किया। इनकी प्रसिद्ध रचना ''शिवशम्भू का चिट्ठा'' इसी शैली के निबन्धों से ओत प्रोत कृति है। इनके अतिरिक्त, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, पंडित माधव मिश्र, सरदार पूर्णसिंह, बाबू श्याम सुन्दरदास, पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, बाबू गुलाब राय, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्विवेदी युग के ही निबन्धकार हैं। जिनकी निबन्ध भाषा और परिमार्जित है।

द्विवेदी युग में ही समालोचना का आरम्भ हुआ। वैसे इसका सूत्रपात भारतेन्दु काल में हो चुका था। इसकी सूचना इमें 'आनन्द कादंबिनी' से मिलती है। जिसमें कि लाला श्रीनिवास दास के नाटक 'संयोगिता स्वयंवर' की विशद आलोचना प्रकाशित हुई थी। किन्तु समालोचना का वास्तविक प्रारम्भ द्विवेदी युग से हुआ। इसी युग में आलोचना के सैद्धान्तिक पक्ष से सम्बन्धित कई लेख प्रकाशित हुए। वैसे भारत में समीक्षा की काई परम्परा नहीं थी यहाँ के विद्वान समीक्षा के नाम पर किसी भी कृति के गुण दोषों पर ही प्रकाश डालते थे लकिन द्विवेदी युग में ही इसका आरम्भ हुआ। इस युग की प्रथम समीक्षा कृति महावीर प्रसाद द्विवेदी की 'कालिदास की निरंकुशता' थी। जिसमें उन्होंने लाल सीताराम बी0ए0 के अनुवाद किये नाटकों के भाषा तथा भाव सम्बन्धी दोष बड़े विस्तार से प्रदर्शित किये। इस युग में आचार्य द्विवेदी के अतिरिक्त जिन अन्य लेखकों ने समीक्षा साहित्य को गतिप्रदान की उनमें मिश्र बन्धु, बाबू श्याम सुन्दर दास, पदम सिंह शर्मा, डॉ0 पीताम्बर दत्त बडथ्वाल, श्री कृष्ण विहारी मिश्र, बाबू गुलाब राय जैसे समीक्षक है। लेकिन समीक्षा के क्षेत्र में जो युगांतकारी कार्य आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किया उसे द्विवेदी युगीन कोई दूसरा समीक्षक नहीं कर सका।

Scanned by CamScanner